|| विष्णु जी की आरती - ॐ जय जगदीश हरे ||

|| ॐ श्री गणेशाय नमः ||

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे |
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे |
ॐ जय जगदीश हरे ||

जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का |
प्रभु दुःख बिनसे मन का ||
सुख-सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का |
ॐ जय जगदीश हरे ||

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं मै किसकी |
प्रभु शरण गहूं मै किसकी ||
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी |
ॐ जय जगदीश हरे ||

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी |
प्रभु तुम अन्तर्यामी ||
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी |
ॐ जय जगदीश हरे ||

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता |
प्रभु तुम पालनकर्ता ||

मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता |
ॐ जय जगदीश हरे ||

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति |
प्रभु सबके प्राणपति ||
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति |
ॐ जय जगदीश हरे ||

दीन-बन्धु दु:ख-हर्ता, तुम रक्षक मेरे |
प्रभु तुम रक्षक मेरे ||
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे |
ॐ जय जगदीश हरे ||

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा |
प्रभु पाप हरो देवा ||
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा |
ॐ जय जगदीश हरे ||

तन, मन, धन सब कुछ है तेरा |
प्रभु सब कुछ है तेरा |
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा |
ॐ जय जगदीश हरे ||

www.hanumanchalisalyric.com